

प्राथमिक स्तर पर रचनात्मक गतिविधियों द्वारा पर्यावरण अध्ययन

राहुल मिश्र*
राजकुमार श्रीवास्तव**

पर्यावरण अध्ययन को प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच रोचक और जीवन में विषय की उपयोगिता की समझ पैदा करने हेतु, पर्यावरण अध्ययन का एक विषय के रूप में विकास क्रम और 'जीवन जीने के अधिकार' की परिपूर्ति के लिए 'राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005' के अंतर्गत निर्धारित उद्देश्य और पाठ्यक्रम के स्वरूप की व्याख्या की गई है तथा उसी संदर्भ में पर्यावरण अध्ययन को गतिविधि आधारित शिक्षण प्रक्रिया से जोड़ने का प्रयास किया गया है। पर्यावरण अध्ययन की पुस्तकों से ली गई विषय-वस्तु की विद्यार्थियों के जीवन में महत्ता और उपयोगिता को इस लेख में इंगित किया गया है। बढ़ती जनसंख्या, शहरीकरण और औद्योगिकीकरण ने शहर से लेकर गाँव तक पर्यावरण को प्रदूषित किया है। इसी आलोक में पर्यावरण अध्ययन विद्यार्थियों के बीच जागरूकता और प्राकृतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण के बीच संबंध स्थापित करता है। शिक्षकों द्वारा बच्चों को क्रियाशील गतिविधियों में व्यस्त करना चाहिए, ताकि वे मूल कौशल सीख सकें।

भारतीय संविधान के द्वारा दिए गए मौलिक अधिकार के अनुच्छेद 21 में जीवन का अधिकार दिया गया है, जीने के अधिकार में सुरक्षा के साथ एक अच्छे पर्यावरण की भी अत्यधिक आवश्यकता होती है। पर्यावरण के अंतर्गत वह सभी ज़रूरी चीज़ें जैसे—शुद्ध व साफ़ पानी, साफ़ हवा, हरा-भरा वातावरण, साफ़-सुथरी नदियाँ, शुद्ध और पर्याप्त भोजन आदि आते हैं जो मनुष्य को जीवित रहने के लिए नितांत आवश्यक हैं। बढ़ती जनसंख्या, अत्यधिक औद्योगिकीकरण व अनियोजित शहरीकरण ने पर्यावरण की उपरोक्त जीवन की आवश्यकताओं को

दूषित कर दिया है। इसी संदर्भ में संयुक्त राष्ट्र संघ ने सन् 1972 में स्टॉकहोम में पर्यावरण पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया तथा संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा विश्व स्तर पर पर्यावरण जागरूकता के कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इसी कड़ी में विद्यालयों में भी पर्यावरण के विभिन्न पक्षों का अध्ययन-अध्यापन आरंभ हुआ है।

कोठारी कमीशन ने संस्तुति दी थी कि पर्यावरण अध्ययन को कक्षा 3 व 4 के विषयों के साथ जोड़कर पढ़ाना चाहिए। प्राथमिक स्तर पर (कक्षा 3 व 5) तक पर्यावरण अध्ययन अलग विषय के रूप में पढ़ाने की बात 1986 की राष्ट्रीय

*प्रवक्ता, मंडलीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (उत्तर पूर्व), दिलशाद गार्डन, दिल्ली-110095

**प्रवक्ता, मंडलीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (उत्तर पूर्व), दिलशाद गार्डन, दिल्ली-110095

शिक्षा नीति में भी की गई थी। पर्यावरण अध्ययन को अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाने का आदेश माननीय सर्वोच्च न्यायालय के द्वारा दिसंबर, 2003 में पारित हुआ। इसके अंतर्गत 'हरित पाठ्यचर्या' की बात की गई। याचिकाकर्ता एम.सी. मेहता की जनहित याचिका (मौलिक कर्तव्य, 51G के आधार पर) पर न्यायालय ने कहा कि भारतीय नागरिकों की वनों, नदियों, झीलों व वन्य जीवों की रक्षा और संरक्षित करने की ज़िम्मेदारी की अपेक्षा है। इस प्रकार, *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* में भी पर्यावरण अध्ययन को कक्षा 3 से 5 तक अनिवार्य रूप से पढ़ाने की बात कही गई। इसी विकास क्रम में पर्यावरण अध्ययन प्राथमिक स्तर पर अनिवार्य और एकल विषय के रूप में पढ़ाने हेतु प्रस्तुत हुआ। यह हमारे मौलिक अधिकार व मौलिक कर्तव्यों से जुड़ा। यह विषय विद्यार्थी को मौलिक रूप से जागरूक बनाने के साथ जीवन में पर्यावरण का प्रयोजन और उसके महत्व को समझने हेतु एक उपयोगी विषय है। पर्यावरण अध्ययन, व्यक्ति को जागरूकता के साथ भोजन, पानी, ऊर्जा, नदी, तालाब, हवा, वन्य जीव, स्वच्छता, पेड़-पौधों आदि के प्रति अपने कर्तव्य को सजगता से कैसे निभाएँ, उसका कौशल प्रदान करता है। इस बात के प्रमाण हमें अफ्रीका के केपटाउन शहर में पीने का पानी समाप्त होने से आए संकट से प्राप्त होते हैं। प्राकृतिक संसाधनों के सही उपयोग से ही जीवन को बचाया जा सकता है, जिसमें पर्यावरण अध्ययन एक अहम भूमिका निभा सकता है। पर्यावरणीय जागरूकता के अभाव के चलते विशेषकर सर्दियों में, हर साल दिल्ली, वायु प्रदूषण के रूप में विषैली गैसों का चैम्बर बन रही है। बैंकॉक और मालदीव जैसे शहर हर साल समुद्र स्तर से नीचे

जा रहे हैं। भारत के कुछ क्षेत्रों में भारी बारिश और सूखा यह दर्शाता है कि पर्यावरणीय असंतुलन पैदा हो चुका है जिसमें प्रत्यक्ष ज़िम्मेदारी मनुष्य की है जो विकास के दौर में भूल गया है कि पर्यावरण जीवन का प्राथमिक आधार है।

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* के आलोक में प्राथमिक स्तर के लिए बोझमुक्त, तनावमुक्त, पाठ्यपुस्तकों का निर्माण हुआ, जो पूर्णतः क्रियाकलाप आधारित हैं। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* के अनुसार प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन के उद्देश्य निम्न हैं —

- प्राकृतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण के मध्य संबंध स्थापित करना।
- बालकों में चारों ओर की दुनिया के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करना ताकि वे सूक्ष्म अवलोकन, चित्रों, आरेखों, वर्गीकरण व स्वयं करने वाली गतिविधियों इत्यादि से मूल ज्ञानात्मक कौशल हासिल कर सकें।
- डिजाइन व निर्माण, अनुमान व मापन पर ज़ोर देना ताकि वे बाद के स्तरों पर तकनीकी एवं संख्यात्मक कौशल प्राप्त कर सकें।
- मूल भाषिक दक्षता विकसित करना, जैसे — बोलना, सुनना, पढ़ना, लिखना केवल विज्ञान के लिए नहीं, बल्कि विज्ञान के माध्यम से भी।

बच्चों में सीखने की प्रक्रिया स्वयं पैदा होती है, क्योंकि बच्चे जन्म से जिज्ञासु होते हैं और वह अपने आस-पास स्थित वस्तुओं में खोज करने की भावना से सृजन की ओर अग्रसर होते हैं। भाषा का प्रवाह जैसे-जैसे बढ़ता है, बालक की खोज प्रवृत्ति तेज़ होने लगती है। इसी मनोवैज्ञानिक

प्रक्रिया को ध्यान में रखकर पर्यावरण अध्ययन की विषय-वस्तु आपसी संबंध, भोजन, पानी, आवास, यात्रा, जीव-जंतु आदि पर निर्धारित की गई है। बालक एक घरेलू वातावरण से विद्यालय प्रक्रिया में जुड़ता है, उसमें भाषा का विकास चल रहा होता है; वह नई-नई चीजों को देखता है और आकर्षित होता है। वह उनके बारे में जानना चाहता है। इसलिए विद्यालय आकर्षण का केंद्र होने चाहिए अर्थात् विद्यालय का वातावरण ऐसा हो कि बालक अपनी सृजनशीलता को विकसित कर सके। क्षमताएँ समयानुकूल उपयोग में लाई जा सकें। विद्यालय प्रक्रिया में बालक कुछ विषयों के प्रति स्वतः आकर्षित होता है और कहीं उसकी रुचि कम होती है। शिक्षक पर निर्भर करता है कि वह पर्यावरण अध्ययन को पढ़ाते समय नए-नए बिंदुओं, शब्दों, अवधारणाओं को समझाने के लिए वातावरण में स्थित वस्तुओं का सहारा ले।

शिक्षक का विस्तृत और उपयोगी दृष्टिकोण ही पठन प्रक्रिया को रोचक बना सकता है। उदाहरण के लिए, कक्षा 4 में 'पहाड़ से समुद्र तक' नामक पाठ में नदियों की यात्रा का विवरण दिया गया है। जब पहाड़ से नदी निकलती है तो स्वच्छ निर्मल पतली धारा के रूप में होती है, जैसे-जैसे पहाड़ से मैदानी क्षेत्रों में आती है, उसके पानी का रंग बदल जाता है। इस बदलते रंग के पीछे के कारणों और जीवन में नदी की उपयोगिता पर चर्चा करने की आवश्यकता बनती है, जिससे बालक के अंदर नदी के प्रति कर्तव्य और प्रेम की अनुभूति पैदा की जा सके। जल का जीवन में महत्व समझने के साथ ही उसके स्रोत और स्रोतों की शुद्धता पर बात करने की आवश्यकता है।

पर्यावरण अध्ययन की विषय-वस्तु आस-पास के वातावरण से जुड़ी है। अतः शिक्षक को चाहिए

कि वे पर्यावरण अध्ययन की विषय-वस्तु को कक्षा के अंदर सीमित करके न रखें, बल्कि विद्यालय के बाहर ले जाकर पर्यावरण से जोड़ें। इससे विद्यार्थियों में विषय-वस्तु की अवधारणात्मक समझ बनती है, वहीं दूसरी ओर विद्यार्थी उसकी उपयोगिता से भी परिचित होंगे। पर्यावरण अध्ययन की शिक्षण प्रक्रिया प्रयोग, अवलोकनों, विश्लेषणों आदि पर आधारित है।

अगर पर्यावरण अध्ययन की थीम भोजन है तो भोजन की उपयोगिता क्या है? भोजन की शुद्धता कैसे बनाई रखी जाए? भोजन के पोषक तत्व क्या हैं? क्या खाना चाहिए, क्या नहीं खाना चाहिए? इन उद्देश्यों के आधार पर भोजन के पाठ को प्रस्तुत किया जाए तो भोजन की उपयोगिता और आवश्यकता की समझ स्पष्ट होगी और दैनिक जीवन में प्रयोग करने के लिए उत्सुकता बढ़ेगी। इस प्रकार विद्यार्थी सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित न होकर व्यावहारिक ज्ञान से अवगत होंगे।

पर्यावरण अध्ययन 'करके सीखने' की कला पर आधारित है। प्रयोग एवं गतिविधि द्वारा विद्यार्थियों में विषय-वस्तु की स्पष्टता और कार्य, व्यवहार में उतारने की कला आती है। प्राथमिक स्तर पर बच्चे किसी विषय-वस्तु को देखकर, छूकर, उपयोग कर आदि के माध्यम से आसानी से पर्यावरण अध्ययन के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं। ये सभी कार्य शिक्षक सहायक सामग्री के माध्यम से विद्यालय के अंदर कर सकते हैं। शिक्षक सहायक सामग्री के उपयोग करने से बच्चे को विषय-वस्तु आसानी से समझ आ जाती है।

शिक्षण कार्य के दौरान विद्यार्थियों की अधिक-से-अधिक सहभागिता की भी अति आवश्यकता होती है। शिक्षक से अपेक्षा की जाती है कि

विषय-वस्तु को ऐसे प्रस्तुत करे कि विद्यार्थी बिना डरे जिज्ञासावश प्रश्न पूछें। शिक्षक भी बीच-बीच में प्रश्न पूछता रहे, जिससे एकाग्रता विषय-वस्तु पर आ जाए। इसके अंतर्गत गतिविधियों से शिक्षण की जरूरत है, जैसे—छोटे-छोटे रोल प्ले, बीजों का प्रस्फुटन, विद्यालय की क्यारियों में कुछ कार्य, चार्ट पेपर पर विभिन्न तरह के आवास बनाना, जीव-जंतुओं के चित्र, जल के शुद्धीकरण की विधि, घुलन व अधुलनशीलता जैसी गतिविधियाँ कक्षा में आसानी से की जा सकती हैं, जिससे विद्यार्थियों की विषय-वस्तु में रोचकता बढ़ेगी और उपयोगिता समझ आएगी।

पर्यावरण अध्ययन की विषय-वस्तु को अधिकतर अध्यापकों द्वारा रटा दिया जाता है, जिसके कारण विद्यार्थी पुस्तक के अभ्यास कार्य तो कर लेते हैं, लेकिन थोड़ा-सा बदलकर उसी प्रश्न को पूछा जाए तो उत्तर नहीं दे पाते। रटने से विषय-वस्तु की पूरी समझ नहीं बन पाती और उसकी उपयोगिता जीवन में क्या है, विद्यार्थी इससे नहीं जोड़ पाते। अतः शिक्षक को पर्यावरण की विषय-वस्तु को रटाना नहीं चाहिए, बल्कि उस पर प्रयोग, अभ्यास आदि का उपयोग करना चाहिए।

अधिकतर समय शिक्षक सीधे विषय-वस्तु को पढ़ाना शुरू कर देते हैं, जबकि विषय 'पर्यावरण अध्ययन' क्यों पढ़ाया जा रहा है, इसकी उपयोगिता जीवन में क्या है? इस पर बात नहीं करते और न ही स्वयं विचार करते हैं। अगर 'क्यों' पर चर्चा हो तो विषय के उद्देश्य और उपयोगिता स्वयं ही निकलकर आ जाएँगे। फिर किसी भी पाठ पर चर्चा करें, लेकिन मूलतः उद्देश्य वही होंगे सिर्फ उदाहरण बदल जाएँगे। पर्यावरण अध्ययन की उपयोगिता परिवेश के अंतर्गत है और बच्चा भी उसी परिवेश

का एक अंग है। उस परिवेश में बच्चे की भूमिका क्या है? इसे समझना और परिवेश में 'कैसे' सहायक बनें, यह जानना ही पर्यावरण अध्ययन की मूल भावना है। शिक्षक की दृष्टि अगर इन प्रश्नों के जवाब देने में सक्षम है तो पर्यावरण अध्ययन एक रोचक और समझपूर्ण विषय के रूप में अपनी सार्थकता पूर्ण करता है।

शिक्षण का मूल उद्देश्य है कि विद्यार्थियों एवं विषय-वस्तु को जानकर, समझकर बोधात्मक अनुभव पैदा करना जिससे विद्यार्थी में प्रकृति के विभिन्न दृश्यों का वर्णन, सौंदर्यपरक समझ एवं अभिव्यक्ति करने की क्षमता विकसित हो। विद्यार्थियों में अवलोकन, खोज, वर्गीकरण, प्रयोग, चित्र बनाना, बातचीत करना, अंतर ढूँढ़ना, लिखना आदि कौशलों का विकास करना ही पर्यावरण अध्ययन का उद्देश्य है। पाठ्यपुस्तक में बहुत सारे क्रियाकलाप दिए जाते हैं, जिन्हें विद्यार्थियों को स्वयं करना होता है ताकि उनमें क्रियाकलाप कौशल का विकास हो सके। इस प्रकार के क्रियाकलापों से विद्यार्थियों में सृजनात्मक रचना करने का कौशल एवं सौंदर्यबोध का विकास भी हो सकेगा। क्रियाकलाप के बाद उस विषय पर चर्चा विद्यार्थियों को अपने अवलोकन के निष्कर्ष निकालने में सहायक होगी। साथ ही, सही दिशा में चर्चा या सुझाव विद्यार्थियों में व्यक्तिगत रूप से सीखने में ज्यादा मददगार हो सकते हैं।

विद्यार्थियों को पर्यावरण के साथ-साथ रोजाना प्रयोग होने वाली चीजों के बारे में बताना एवं उनकी उपयोगिता से परिचय कराना है, उदाहरण के लिए मच्छरों से स्वयं को बचाना, मच्छरों से होने वाली बीमारियों, जैसे—मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया से परिचय कराना, मच्छरों को पैदा होने से कैसे रोका

जाए, उसके उपाय आदि। इन सबकी चर्चा कक्षा में की जा सकती है। विद्यार्थी जागरूकता के साथ बचाव के उपाय भी सीख सकेंगे।

‘किसानों की कहानी-बीज की जुबानी’ कक्षा 5 के इस पाठ के अंतर्गत खेत से उत्पन्न होने वाली फ़सल और उन्हें कीड़ों से बचाने के उपाय, अलग-अलग मौसम में खेती से जुड़े त्योहारों की जानकारी दी गई है अर्थात् भारत में नई फ़सल आने से होने वाली खुशियों के प्रतीक के रूप में त्योहार मनाए

जाते हैं। यह जानकारी खेती-फ़सल और सांस्कृतिक त्योहार के बीच एक संबंध बताती है तथा एक कड़ी के रूप में एक-दूसरे से जुड़ती है।

इसी क्रम में प्राथमिक स्तर पर कक्षा 3 से 5 तक की पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तक *आस-पास* में निम्नलिखित विषयवस्तुओं की रचनात्मक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सुझाया गया है, जिसे शिक्षक पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण में प्रयोग कर सकते हैं।

क्रम	गतिविधियाँ	शिक्षण प्रक्रियाएँ
1.	वर्गीकरण करना	‘पंख फैलाएँ उड़ते जाएँ’ कक्षा 3 के इस पाठ की विषय-वस्तु के माध्यम से विद्यार्थियों को विभिन्न पक्षियों के रंग, आकार और चोंच से परिचित कराना है और कौन-सा पक्षी कैसा भोजन करता है, बताना है। इस पाठ में वर्गीकरण के माध्यम से विद्यार्थी पक्षियों के बारे में परिचित हो सकेंगे।
2.	यात्रा वृत्तांत के द्वारा	‘बसेरा ऊँचाई पर’ कक्षा 5 के इस पाठ से विद्यार्थियों को, यात्रा की कैसी तैयारी करें? ऊँचाई वाले ठंडे क्षेत्रों में आने वाली चुनौतियों का निरीक्षण, अवलोकन करें, बताया गया है। वहाँ की अर्थव्यवस्था, आवास, रहन-सहन, आने-जाने के साधन इत्यादि को इस गतिविधि के माध्यम से समझाया जा सकता है।
3.	अवलोकन	कक्षा 4 के ‘चलो, चलें स्कूल’ पाठ में अवलोकन के माध्यम से समझाने का प्रयास किया गया है कि अलग-अलग भौगोलिक क्षेत्रों में आने-जाने के साधनों का प्रयोग कैसे करते हैं। इस पाठ से बच्चे यह समझेंगे कि किस प्रकार विभिन्न प्रकार के वातावरण मानव जीवन को प्रभावित करते हैं।
4.	चर्चा करना	शिक्षक विषय-वस्तु को समझाने के लिए चर्चा के माध्यम से निम्नलिखित पाठों की विषयवस्तुओं को समझा सकते हैं, जैसे — 1. किसके जंगल (कक्षा 5 की गतिविधि) (i) जंगल क्या होते हैं? (ii) क्या सभी जंगलों में एक ही तरह के पेड़ होते हैं? (iii) अगर जंगल नहीं बचेंगे तो हम भी नहीं बचेंगे, ऐसा क्यों? (iv) क्या तुम्हें जंगलों से लगाव है? (v) पेड़-पौधे लगाना क्यों आवश्यक है? जंगलों के कटने के क्या-क्या कारण हो सकते हैं? 2. नंदिता मुंबई में (कक्षा 4 की गतिविधि) (i) बड़े शहर की समस्याएँ (ii) पानी की किल्लत (iii) स्लम बस्तियों की चुनौतियाँ

5.	चर्चा करना	कक्षा 3 के पाठ 'पकाएँ, खाएँ' में, भोजन पकाने में प्रयुक्त साधनों का विवरण, जैसे—कच्चा चूल्हा, अंगीठी, कैरोसीन तेल से लेकर स्टोव, हीटर, तंदूर, गोबर, गैस, एल.पी.जी. (लिक्विड पेट्रोलियम गैस) आदि के बारे में चर्चा करना। ऐसी कौन-सी चीजें हैं जो बिना पकाए खाने के लिए तैयार कर सकते हैं? उनके नाम और बनाने के तरीके बताएँ, जैसे— (i) भूनकर खाने वाले (ii) उबालकर खाने वाले (iii) तलकर खाने वाले (iv) सेककर खाने वाले
6.	वर्गीकरण करना	कक्षा 4 के पाठ 'कान-कान में', विभिन्न प्रकार के जानवरों के बारे में बताया गया है। इस पाठ को अच्छी तरह से समझाने के लिए शिक्षक को वर्गीकरण का सहारा लेना पड़ेगा, जैसे— किस जानवर के सिर पर कान होते हैं? किस जानवर के कान बाहर दिखाई देते हैं और किसके दिखाई नहीं देते हैं? इसी तरीके से कौन-से जानवर अण्डे देते हैं और कौन-से जानवर बच्चे देते हैं? इससे बच्चों में यह समझ बनेगी कि जिन जानवरों के कान बाहर नहीं दिखाई देते, वे अण्डे देते हैं और जिनके कान दिखाई देते हैं, वे बच्चे देते हैं।
7.	कविता के द्वारा	कक्षा 5 के 'चखने से पचने तक' नामक पाठ में खिड़की वाले पेट की, कौन कहाँ से आए जी, ज़मीन से खज़ाना, नामक विषय-वस्तु को कविता के माध्यम से विद्यार्थियों को समझाया जा सकता है।
8.	कला अभिनय	कक्षा 5 के 'मच्छरों की दावत' नामक पाठ को भी कला अभिनय द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है जिसमें विद्यार्थी मच्छरों के काटने से होने वाली बीमारियों और उनसे बचाव को समझ सकते हैं।
9.	संवाद करना	कक्षा 3 के पाठ 'हमारा पहला स्कूल' के अंतर्गत विभिन्न संबंधों और पारिवारिक गतिविधियों से परिचय कराना है। (i) परिवार में आपने क्या सीखा और किससे सीखा? सूची बनाएँ। (ii) परिवार के व्यक्तियों की खास आदत को बताएँ और ऐसे वह क्यों और कब करते हैं?
10.	प्रयोग करना	कक्षा 4 के 'पानी के प्रयोग' नामक पाठ में विषय-वस्तु को प्रयोग द्वारा समझाने का प्रयास किया गया है, जैसे— क्या डूबा? क्या तैरा?— इसके अंतर्गत विद्यार्थी कुछ भारी और कुछ हलकी वस्तुओं को लेकर प्रयोग करें और देखें कि कौन-सी वस्तु डूबती है और कौन-सी नहीं, इसका पता करें। क्या घुला? क्या नहीं?— इस प्रयोग के माध्यम से विद्यार्थियों में, घुलने और न घुलने वाली वस्तुओं के बारे में समझ पैदा की जा सकती है। पानी गया कहाँ?— जिस प्रकार पानी गरम करने पर भाप बनकर वाष्पित हो जाता है, उसी प्रकार तेज़ धूप पड़ने पर गीले कपड़ों की नमी वाष्पित हो जाती है। इस प्रयोग के माध्यम से पानी की वाष्पन प्रक्रिया को समझा सकते हैं।

उपर्युक्त रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को निम्नलिखित लाभ हो सकते हैं, जैसे —

- खेल-खेल के द्वारा सीखना।
- आत्मविश्वास में बढ़ोत्तरी होना।
- आनंददायी एवं रुचिकर तरीके से सीखना।
- तार्किक चिंतन का विकास होना।
- स्व-अनुशासन की भावना विकसित होना।
- पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता विकसित होना।
- विषय-वस्तु को अपने आस-पास के वातावरण से जोड़ना।
- समूह में कार्य करने की आदतों का विकास होना।
- स्थायी समझ होना।
- पर्यावरण के महत्व को समझना।
- पर्यावरण के प्रति सद्भावना विकसित होना।
- नेतृत्व की क्षमता विकसित होना।

इस प्रकार गतिविधियाँ शिक्षकों को विषय-वस्तु रोचक बनाने, शिक्षण को प्रभावी बनाने और कार्य-कुशलता में प्रवीण होने का मौका देती हैं। इस प्रकार की गतिविधियों से वे अधिगम प्रक्रिया की रुचिपूर्ण, आनंददायक और विद्यार्थियों में बेहतर समझ विकसित करा सकेंगे। पर्यावरणीय गतिविधियों के द्वारा शिक्षक विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सहभागी बनाने का अच्छा प्रयास कर सकते हैं।

इस प्रकार पर्यावरण अध्ययन आस-पास की वस्तुओं और वातावरण से परिचित कराता है, साथ ही वह विद्यार्थी को जागरूक बनाता है कि कैसे पर्यावरण को बेहतर और स्वच्छ बनाया जाए। पर्यावरण अध्ययन में विद्यार्थी भोजन, आवास, जीव-जंतु आदि के बारे में समझ विकसित करते हैं, साथ ही उन्हें आस-पास की दुनिया में जोड़ पाने में सक्षम हो सकते हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण अध्ययन को गतिविधियों के आधार पर रोचक बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए, जो सीखने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। आस-पास के वातावरण, प्रकृति की चीजों व लोगों से कार्य व भाषा, दोनों के माध्यम से अंतर्क्रिया करना, इधर-उधर घूमना, खोजना, अकेले काम करना या अपने दोस्तों या वयस्कों के साथ काम करना, भाव को समझना, अभिव्यक्त करना, पूछने-सुनने के लिए प्रयोग करना आदि ऐसी कुछ महत्वपूर्ण क्रियाएँ हैं, जिनके द्वारा सीखना संभव होता है। इस प्रकार विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति समझ विकसित होगी तथा आस-पास के वातावरण एवं समाज का संपोषणीय विकास हो सकेगा।

संदर्भ

- मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 1986. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति—1986*. भारत सरकार, नयी दिल्ली.
- . 1992. *नेशनल पॉलिसी ऑन एजुकेशन, प्रोग्राम ऑफ़ एक्शन. 1992*. भारत सरकार, नयी दिल्ली.
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.
- . 2017. *पर्यावरण अध्ययन आस-पास* (कक्षा 3 से 5). रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.
- शिक्षा मंत्रालय. 1966. *एजुकेशन एंड नेशनल डेवलपमेंट-रिपोर्ट ऑफ़ कमीशन (1964–66)*. भारत सरकार, नयी दिल्ली.